http://www.epitomejournals.com, Vol. 2, Issue 11, November 2016, ISSN: 2395-6968

Epitome Journals
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN : 2395-6968 | Impact Factor = 3.656

"कृष्ण बलदेव वैद के उपन्यासों में स्त्री विर्मश : नर - नारी "

उल्हास श्रीराम पाटील
संत ज्ञानेश्वर महाविद्यालय सोयगांव,
ता. सोयगांव जि. औरंगाबाद.
ulhaspatil४९@gmail.com
&
प्रा. डॉ. बी.एफ.शेख (Research Guide)
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान
महाविद्यालय धरणगांव

Abstract

समाज निर्माण में पुरुषों के साथ ही स्त्रीयों का योगदान महत्वपूर्ण है | हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री - चेतना का स्वर प्रेमचंदोत्तर रचनाओं में सुनाई नहीं पडता ऐसा नहीं है | यह स्वर प्राय: लेखिकाएँ बुंलद करती रही है | इनमें कृष्णा सोबती, महादेवी वर्मा, और मन्नु भंडारी आदि का नाम लिया जा सकता है | स्त्री सशक्तीकरण का स्वर बुंलद करने में सभी लेखिकाओं जैसे कात्यायनी, अनामिका, चित्रा मुदृगल, मैत्रेयी पुष्पा आदि महत्वपूर्ण है |

Keywords : समाज, स्त्री, शक्ती, हिन्दी , साहित्य

Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.

Research Paper

डॉ. रोहिणी अग्रवाल का एक कथन है,

> " वस्तु: नारी पुरुष की परस्पर पूरकता सृष्टि का अन्यत्म रहस्य है | यह सत्य है कि समय के साथ- साथ पुरुष के प्रबल से प्रबलत्तर होते चले जाने के कारण नारी अपनी स्वतंत्र सत्ता खोकर पुरुष की अनुगूंज मात्र बनकर रह गई, पुरुष उसका भाग्यविधाता और जीवन नियन्ता बन गया तो भी उसके बिना पुरुष और पुरुष ही क्यों समाज एवं राष्ट्र का विकास संभव नही | "[1]

स्त्री सशक्तीकरण की शुरुआत वास्तव में सजग चेतना के उदय से होती है | व्यक्तिगत स्तर पर स्त्री सचेत हुई है, लेकिन बडे पैमाने पर यह शुरुआत होनी अभी बाकी है | समाज में नारी को एक नौकर या गुलाम रखा जाता है | आजभी मानसिक शोषण और शारीरिक शोषण किया जाता है | शराब पिकर उसके साथ मारपीट होती है, दहेज के लिए जलाया जाता है | यह सब होता है तब इस कार्य करने में एक नारी का भी सहयोग होता है | साहित्य के माध्यम से वाणी मिलने लगती है | तो कई तरह के आक्षेप रचनकारों पर लगने लगते है | वो चाहे मृदुला गर्ग हो, कृष्ण सोबती हो, या कृष्ण बलदेव वैद जैसे कथाकार स्त्री लेखिकाओं ने तो स्त्री उत्पीडन के विरुध्द पितृसत्ताक ढाँचे से आवाज बुलंद की है | कृष्ण बलदेव वैद का नाम इस संदर्भ में विशेष रुप से उल्लेखनीय है |

किसी पुरुष साहित्यकार द्वारा लिखा गया हिन्दी का 'फेमिनिस्ट' उपन्यास है | नर-नारी हिन्दी का फैमिनिस्ट उपन्यास है| नर-नारी अपन्यास के माध्यम से वैदजी पहचान उभरकर सामने आयी यह उपन्यास १९९६ मे प्रकाशित हुआ| यह उपन्यास काफी चर्चित रहा है| इस उपन्यास के केंद्र में मात्र 'यौन संबध' ही रहा है | कृष्ण बलदेव वैद ने इस उपन्यास में समाज का घिनौना रुप और पुरुष - वृत्ति का यथार्थ चित्र किया है |

वैद जी का नर- नारी यह उपन्यास इस विषय को पाठकों के समक्ष बडी सुक्ष्मता से प्रस्तुत करता है | जिस विषय पर कम रचनाकारों ने कलम चलाई है | स्त्री - पुरुष संबंध का सजग चित्रण किया है | इस संबध में वैद जी का मानना है,

> "सैक्स को साहित्य से खारिज नहीं किया जा सकता, उसी तरह जैसे जीवन और अनुभव को चेतना से खारिज नहीं किया जा सकाता | 'सैक्स' कामुकता के रुप में हमारे सौंदर्यबोध का अभिन्न अंग है | एक भूख के रुप में भी हमारे जीवन में मौजुद रह सकती है, फिर साहित्य में उसके चित्रण से गुरेज क्यों ? उसे लिजलिजे, झेंपू या फिर हमेशा घिसपिट चुके पुराने मुहावरे में पेश करने की जरुरत या जिद्द क्यों ? सच तो यह है कि हम सैक्स के बारे में बिलकुल बेईमान भी है और गलत भी | बेईमानी का आलम यह है कि हम अपनी बोलचाल में जिन शब्दो का प्रयोग करते है और जिन भावों को व्यक्त करते है वही, अगर हमें किसी कृति के चरित्रों की बातचित या सोच में सुनायी दे जायें तो हम बिदक उठते है, उस कृति के लेखक को अश्लिल कह कर फटकारने लगते है |... मैं साहित्य में सेक्स संबधी वर्जनाओं का विरोधी हूँ | मुझे नंगेपन से परहेज नहीं मेरी दृष्टि में कोई शब्द अश्लिल नहीं, शरीर का कोई अंग अश्लिल नहीं किसी शारीरिक इरकत का कलात्मक वर्णन अश्लिल नहीं, जरुर नहीं कि अश्लिल हरकतों का वर्णन या चित्रण भी अश्लिल हो, उसी तरह जैसे जरुरी नहीं की गंदगी और असुंदरता का चित्रण भी गंदा और असुंदर हो, कला का सौंदर्य वस्तू की सुंदरता पर निर्भर नही करता | "[2]

आज के इस समाज में स्त्री - पुरुष भेदभाव के साथ ही स्त्री - पुरुष कामजीवन में भी भेदभाव दिखाई देता है | दोनों मनुष्य हैं, दोनों का शरीर एक समान है | दोनों को शारीरिक आवश्यकताएँ है लेकिन समाज में दोनो को विभिन्न अंगो से देखा जाता है | समाज में यह पंरपरा बन गयी है कि, पुरुष ने बाहरी संबध रखे तो वह सम्मान जनक अगर किसी स्त्री ने बाहरी संबध रखे तो वह रंण्डी करार दी जाती

Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.

है | स्त्री - पुरुष के भेदभाव का सजग चित्रण वैद जीने 'नर- नारी' के माध्यम से किया है, 'नर - नारी' उपन्यास में राजु ऊर्फ सुअर स्वयं बाहय हैं, लेकिन अपनी पत्नी को काबु में रखना चाहता है, वह कहता है,

> "मुझे औरतो की क्या कमी , अगर अपने बिस्तर में सेटिफेक्शन नही मिलेंगा तो बाहर झख मारुंगा | वह तो वैसे भी मारता ही हूँ | प्रमोशन हो जाएगी तो और मारुंगा | लेकिन बाहर झख मारने का भी असली मजा तभी आता है जब अपनी बीवी पूरी तरह अपने कब्जे में हो बेसिक बात यही है... सीमा की बात दूसरी | वह अभी कच्ची | इसिलिए तो नौकर नहीं रखता घर में | मालकिन में सेक्स अपील हो तो नौकर रखना खतरनाक | नौकरानिया ही सेफ | जरुरत के वक्त काम आ जाती है | जैसे कमला | काली लेकिन एकदम क्रिस्प | चरक लगी साडी जैसी | अगर सीमा इसी तरह रही तो किसी दिन कमला से काम चलाना पडेगा |"[३]

आज भी स्त्री पर किस प्रकार अत्याचार हो रहे है | आज भी राजकुंवर जैसी स्त्री को सती के नामपर जिन्दा जलाया जा रहा है | अर्थात किस प्रकार अन्याय अत्याचार हो रहे है इसे यहॉ प्रकट किया है | सभी धर्मो में नारी अन्याय-अत्याचार का शिकार बनी है | नारी किसी भी धर्म की क्यों न हो वह शोषित ही है | इसीलिए 'नर-नारी' की डॉली कहती है |

> "मॉ जी औरत का हाल बुरा हर मजहब में ईसाई कौन से कम आदम और हवा हवा का किस्सा मॉ जी मालूम ! ईसाइयों ने औरत को जादु गरनी कहकर सतायॉ मुसलमानों ने पत्थर मारे यहुदियों ने हिंन्दुओं ने उसे जलाया | औरत को दबाये रखने का उपदेश हर मजहब में |" [4]

पहले स्त्री सती जाती थी लेकिन आज उसका स्वरुप बदल गया है उसे दहेज के लिए मारा जा रहा है उसका शारीरिक और मानसिक शोषण किया जा रहा है | बांझ मॉ जी स्त्रीयों के दु:ख के संबंध में कहती है,

> "औरत - औरत की दुश्मन क्यो लडती है आपस में | मर्द क्यो हमारे तन - मन - धन के मालिक | शादी से पहले पिता फिर पति फिर बेटा और भाई क्यो ! डॉली कहती है औरत अमरीका में भी आजाद नही मॉ जी ! यहॉ अभी एक जलायी जाती है | रुपकंवर बेचारी सब के सामने जलती चिता में सरकार भी देखती रह गयी | यहॉ तो कई पढे-लिखे लोग, लोग की सती के हक में उन मर्दो को गोली, डॉली सच कहती है | बालों से पकड कर घसीट ले गये उस बेचारी को झोंक दिया वह चिखती रह गयी ... अग्नि परिक्षा मैं पूछती हूँ मर्द की क्यो नहीं उसके पाप क्यों माफ | लोकलाज का टंटा औरत के लिए ही क्यों ? |" [५]

आज समाज में यह चित्र इस तरफ नजर आता है कि बेटे के लिए स्त्री - भ्रूण हत्याएँ की जा रही है | आज के वर्तमान युग में भी बेटा - बेटी में भेदभाव की प्रवृत्ति कम नही हुई है | हर एक स्त्री को संतान बेटे के रुप मे ही चाहिए | बेटा कुल का दीपक, बुढापे का सहारा, बेटी पराया धन आदि प्रवृत्तियॉ समाज में जाद्यातर दिखाई देती है | स्त्री की मानसिकता का भी कारण है वह भी बेटा ही चाहती है | इसी बारे में 'नर-नारी' पात्र मम्मी का कथन है,

> "दूध नहीं दे सकी सब कहते है, सद में सुख गया इस मरजानी को न जाने किसने इसके डैडी ने उसका मजाक मुसीबत मेरी हर एक से करती फिरती है, मेरी मॉ का दूध इसलिए सुख गया था क्योंकि मैं लडकी अगर मॉ को पता चल गया होता मरवा देती मुझको पेट मे ही उसकी बदकिस्मती उस जमानें में पता नहीं चलता था पहले वर्ना वह तो आखिर तक बेटे कि उम्मीद डॉक्टर जब बोला बेटी मै बेहोश .... दूसरी भी बेटी फिर मैं क्या करती, मेरा क्या होता ! क्या होता कौन संभालता मुझको |" [६]

Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.

समाज में स्त्री के लिए बांझपन एक गाली बन चूकी है | कई स्त्रियों का यह दोष न होते हुए भी उन्हें इस त्रासदी का सामना करना पडता है | बांझपन यह समस्या समाज में हर शहर, गांव, गली में है | परंतु कही जगह इसमें महिला को ही दोषी समझा जाता है, बल्कि कई जगहों पर पति नामर्द है, कही पर पति की इज्जत बचाने के लिए स्त्री बांझपन स्वीकार कर लेती है | इसी बात को वैदजी ने 'नर-नारी' की केंद्रिय पात्र के माध्यम स्पष्ट किया है, पात्र है बांझ मॉ जी उसे सभी मॉ जी बुलाते थे | वह वृध्दा थी, स्वस्थ थी, सुखी और सजग थी | उसके बारे में अनेक अफवाहे फैलाई थी |

डॉ. अन्नपूर्णा के अनुसार,

> "फ्रायड के मतानुसार हमारी समस्त मनस्थिति, मनोद्वेग तथा मनोविचार का मूल स्थल यौन भावना ही है | अत: फ्रायड ने मानव जीवन की पूर्ण व्याख्या यौन को केंन्द्र में रखकर की है |" [७]

बांझ मॉ जी का विवाह उसके माता-पिताने एक सरकारी नौकरी करनेवाले लडके के साथ किया था | लेकिन व लडका नामर्द निकलता है | अपनी इस हिनता की क्षतिपूर्ति वह उसे मार पिट करता था | इसी बात से तंग आकर बांझ मॉ जी अपनी सहेली चम्बेली की सिखायी चाल चली |

> "मैने चम्बेली की सिखायी चाल चली और दिया मरोडा और वह रोया जारोकतार तो मै शर्मिंदा | ... मैं बोली, कोई इलाज - विलाज | वह कुछ नही बोला | मुहँ मोडकर रोता सिसकता रहा !... आखिर वह उठा उसने आँखे पोछी और बोला सारा कसूर मेरी मॉ का अब मेरी इज्जत तेरे हाथ |"[८]

अपने पति को अपने सामने नामर्द पण स्वीकार करना यह बात से बांझ मॉ जी मन ही मन खुश होती है | इससे वह अपनी इच्छाओं पूर्ण करने के लिए उसे मौका मिलता है | उससे हमेशा मर्यादा के पर्दे में रहकर ही अपनी यौन इच्छाओं को पूर्ण किया | इसका पति नामर्द था, वह अपने पति की इज्जत बचाने के लिए उसके पति के सच को अन्त तक किसी को नहीं बताया की वह बांझ नहीं है | इस बांझ ापन के वजह से रिश्तेदारों और लोगों के असहनीय वालो को सहा |

बांझ माजी भी पुरुषो की अनैतिकता के संबंध मे सोचती है,

> "मर्द लोग भाभीयों, सालियों, बीवी की सहेलियों, नौकरानियों से छेडछाड कर सकता है, तो औरत क्यो नही ? ... मर्द कोठे पर जा सकता है, औरत क्यों नही ? |"[९]

राजु एक अहंम ग्रस्त व्यक्ति है | अपनी पत्नी सीमा को वह शक की दृष्टि से देखता है | वह अपनी पत्नी सीमा को पीडा पहुँचाकर यौन परितृष्टि हासील करता है | इसी को मनोविज्ञान की भाषा में 'परपीडन रति' कहा गया है | वह अपनी पत्नी से बलात्कार करने की कोशिश करता है |

> "मैने पूरे जोर से उसके पैरों को पकड कर उसकी टांगो को यू - खोल दिया जैसे उन्हे चीर ही डांलूंगा बीच से | फिर मैंने देखा उसने साडी और पेटीकोट के नीचे अन्डरवेअर तक नहीं पहना हुआ था | मैंने वहा थूक कर कहा, बेशर्म इसी तरह नंगी घूमती रहती हो ! मैं आज तुझे छोंडूंगा नहीं, फिर मैने उसकी साडी को खीचना शुरु कर दिया | . . . उस वक्त सीमा मुझे मेरी बीवी नही एक अकडी हुई औरत नजर आ रही थी जिसने मुझे चैलेंज किया था उस वक्त तो अपने नीचे दबी कसमसाती गालियाँ बकती, धमकियॉ देती सीमा के उपर चढा, मैं पता नहीं क्या सोच रहा था | लेकिन उस वक्त मेरी ख्वाहिश यही थी कि, किसी तरह उसे नंगा कर के रेप करु |"[१०]

Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि कृष्ण बलदेव वैद का नर-नारी उपन्यास केंद्र स्थानपर 'यौन जीवन' ही है | और जिसमें बांझपन बेटा-बेटी में फर्क, सतीप्रथा के नामपर जिन्दा जलाया जा रहा है, शारीरिक और मानसिक शोषण आदि नारी जीवन से जुड़ी विभिन्न समस्याओं का चित्रण किया गया है | नारी को अपने जीवन में कितना कुछ सहना पडता है | इसका वर्णन भी वैदजी ने अत्यंत मार्मिकता से किया है | उनका शोषण किस तरह किया जाता है, इसका रेखांकन भी विवेचन उपन्यास में बखूबी हुआ है | वैदजीने उपन्यास में स्त्रीयों के माध्यम से पुरुष और पुरुष पात्रों के माध्यम सें स्त्रीयों को देखा-दिखाया गया है | पुरुष को किस तरह सुअर के रुप में प्रस्तुत किया है, इसका चित्रण उपन्यास में किया है | वैदजी स्त्री - जीवन की केवल त्रासदियों को ही पाठकों के सम्मुख पेश नहीं करते बल्कि वह उन्हे सम्मान दिलवाना चाहते है | लेखक का यह उपन्यास स्त्री की ओर देखने का नया दृष्टिकोन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगा |

संदर्भ सूची

१. हिन्दी उपन्यास में कामकाजी महिला - डॉ. रोहिणी अग्रवाल पृष्ठ क्र. ९

२. जवाब नही - कृष्ण बलदेव वैद पृष्ठ क्र. ८९, ९०

३. नर-नारी - कृष्ण बलदेव वैद पृष्ठ क्र. ६२, ७७, ७८.

४. नर-नारी - कृष्ण बलदेव वैद पृष्ठ क्र. ८२

५. नर-नारी - कृष्ण बलदेव वैद पृष्ठ क्र. ८२

६. नर-नारी - कृष्ण बलदेव वैद पृष्ठ क्र. ९८

७. जैनेंद्र के उपन्यास साहित्य में स्त्री - पुरुष संबंध मे उदृत - डॉ. विजया पडोडे पृष्ठ क्र. १५.

८. नर-नारी - कृष्ण बलदेव वैद पृष्ठ क्र. २७

९. नर-नारी - कृष्ण बलदेव वैद पृष्ठ क्र. ९१

१०. नर-नारी - कृष्ण बलदेव वैद पृष्ठ क्र. १७२, १७३.

Dr. Pramod Ambadasrao Pawar, Editor-in-Chief ©EIJMR, All rights reserved.